



CSIR-CDRI transferred the technology of "A Nucleic Acid Staining Dye (Green R)" to M/s. Geneto Protein Pvt. Ltd., Lucknow during 10-11 May - 2022 for Biomedical Applications.

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow

अगले दो माह में बाजार में मिलेगी स्वदेशी डाई



तकनीक हस्तांतरण के समय उपस्थित सीडीआरआइ के विज्ञानी • सौ: सीडीआरआइ

लखनऊ : जीव विज्ञान संबंधी शोध और कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों में छिएनए (डाइआक्साइडन्यूक्लिक एसिड) और आरएनए (राइबो न्यूक्लिक एसिड) प्रोटीन की पहचान में उपयोग होने वाली डाई पर सीडीआरआइ के विज्ञानियों की सफलता एक कदम और आगे बढ़ गई है। प्रयोगशालाओं के उपयोग के लिए अगले दो माह में यह स्वदेशी डाई बाजार में उपलब्ध होगी। सीडीआरआइ के निदेशक डा. श्रीनिवास रेड्डी के अनुसार, भारतीय शोधकर्ताओं को इस नवाचार से विदेशी महंगी डाई पर निर्भरता कम होगी।



CSIR-CDRI technology of “An Industrially Viable Process of an Orally Active Investigational New Drug S007-1500 for Fracture Healing” transferred to M/s Troikka Pharmaceuticals Limited, Ahmedabad to 14-16 February, 2022

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow

सीएसआईआर-सीडीआरआई के 71 वें वार्षिक दिवस पर नई दवा की घोषणा

दूटी हड्डियों के लिए टैबलेट जल्द

राहत

लखनऊ | वरिष्ठ संवाददाता

हाथ-पैर या शरीर के किसी भी दूसरे अंग की हड्डी में फ्रैक्चर को जोड़ने के लिए अब महीनों प्लास्टर बंधवाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। महज 15 से 20 दिन दवा खाने पर हड्डियां जुड़ जाएंगी। हड्डियों को जोड़ने वाली नई दवा सीडीआरआई ने खोजी है।

गुरुवार को संस्थान ने प्रभावी रैपिड फ्रैक्चर-हीलिंग दवा की तकनीक को अहमदाबाद स्थित ट्रोइका फार्मास्युटिकल को हस्तांतरित किया। सीडीआरआई के निदेशक डॉ. डी श्रीनिवास रेड्डी ने कहा कि संस्थान व ट्रोइका फार्मास्युटिकल के बीच प्रभावी रैपिड फ्रैक्चर-हीलिंग दवा की तकनीक के आगे के विकास, निर्माण और व्यावसायिकरण लाइसेंस के लिए समझौता किया गया है। इसका फायदा मरीजों को मिलेगा। सीडीआरआई के प्रवक्ता डॉ. संजीव यादव ने बताया कि फ्रैक्चर की दशा में मरीजों को दो से तीन

इनको लाइसेंस

- हड्डी के इलाज के लिए यूएसए की एवेता बायोमिक्स को अमेरिकी पेटेंट लाइसेंस
- एंटीशोम्बोटिक व फ्रैक्चर हीलिंग प्रत्याशी दवा को लाइसेंस दिया गया



सीएसआईआर-सीडीआरआई के 71 वें वार्षिक दिवस पर गुरुवार को वैज्ञानिकों ने एकजुट होकर रखे अपने विचार।

जल्द बाजार में आएगी दवा

डॉ. अतुल गोयल और डॉ. दिव्या सिंह ने बताया कि मौजूदा समय में हड्डी के फ्रैक्चर को जोड़ने के लिए मुंह से लेने वाली (ओरल) कोई भी दवा उपलब्ध नहीं है। रैपिड फ्रैक्चर-हीलिंग एजेंट के रूप में नई रासायनिक इकाई विकसित की है। जिसका विभिन्न जन्तु मॉडलों में प्रभावकारिता और सुरक्षा संबंधी अध्ययन किए जा चुका है। भारत ने प्रथम चरण में क्लीनिकल ट्रायल की अनुमति भी हासिल कर ली है। ट्रोइका के कार्यकारी निदेशक डॉ. अशील पटेल ने कहा कि जल्द ही यह दवा बाजार में मरीजों के लिए लाई जाएगी। सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. शेखर सी माण्डे इस आयोजन से वर्तुअली जुड़े।

माह तक प्लास्टर बांधने की जरूरत पड़ रही है।

सीडीआरआई ने जो दवा खोजी है। उसका सेवन डॉक्टर की सलाह पर 15 से 20 दिन करना पड़ेगा। इस दौरान

दूटी हड्डी आपस में जुड़ जाएगी। इस दौरान मरीज को प्लास्टर भी बंधवाना होगा। इससे हड्डियों के गलत जुड़ने के खतरे को भी टाल सकेंगे। इससे मरीजों को काफी राहत मिलेगी।

भारत के वैज्ञानिकों ने जल्द बनाई को-वैक्सीन

वैक्सीन ने हमारी कोरोना से लड़ाई आसान की है। भारत ने कम समय में स्वदेशी वैक्सीन खोजने में अहम भूमिका निभाई। को-वैक्सीन को तैयार करने में वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत की। ये बातें इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के महानिदेशक डॉ. बलराम भार्गव ने कही। वह सीएसआईआर-सीडीआरआई के 71 वें वार्षिक दिवस को संबोधित कर रहे थे। 47 वें मेलानबी व्याख्यान में डॉ. बलराम भार्गव ने गोइंग वायरल: मेकिंग ऑफ को-वैक्सीन द इनसाइड स्टोरी साझा की।

दवा की खोज में पुस्करा

- रसायन विज्ञान की श्रेणी में कोलकाता स्थित आईआईएसआईआर के डॉ. अलकेश बिसाई व मोहली आईआईएसआईआर के डॉ. एसएसवी रामशास्त्री
- जीवन विज्ञान श्रेणी में हैदराबाद स्थित डीएनए फिगर प्रिंटिंग और निदान केंद्र की डॉ. मदिका सुखा रेड्डी और फरीदाबाद के टीएचएसटीआई डॉ. अमित अवस्थी

Trust, transparency helped in developing Covaxin: ICMR DG

PNS ■ LUCKNOW

ICMRI celebrated its 71st Annual Day on Thursday. On the occasion, the prestigious '47th Sir Edward Mellanby Memorial Oration' was delivered by Secretary, department of Health Research, (Ministry of Health & Family Welfare) and DG of ICMR Balram Bhargava. The topic of his talk was 'Going Viral: Making of Covaxin the Inside Story'.

"Trust, transparency, timeline and mutual respect resulted in manufacturing of Covaxin in record time through public-private partnership. To combat the Covid-19 pandemic, the government followed Buddha's middle path to manage lockdown. It was balanced in nature; neither very stringent like in China nor very liberal like in European countries. With Covaxin, we proved that we could manufacture vaccines from start to finish. This story is an inspiring example for the scientific world," he said.

Secretary of DSIR and DG of CSIR Shekhar C Mande greeted the team CSIR-CDRI on their Annual Day and showed his trust upon the commitment of staff for contribution in healthcare and pharmaceutical industry. Director of CSIR-CDRI D Srinivasa Reddy briefed the achievements of the institute in the past one year. The institute has licensed the Dalbergia sissoo - US patent (US 10,292,994,B2) to AVETA Biomics Inc, USA, for further development as a botanical drug for the treatment of Osteo-Health related disorders as per USFDA regulations.

Further, two of the promising investigational new drugs S007-867

(antithrombotic) and S007-1500 (fracture healing drug candidate) have been licensed to industry partners for further collaborative development.

"Phase-I clinical trials for both the INDs will be initiated shortly. The institute also has a rich pipeline of new leads and candidate drugs for different disease areas of national importance, including malaria, leishmaniasis, cancer, neuropathic pain, stroke, BPH, etc," he said.

Reddy announced a collaboration in the form of a licence agreement between CSIR-CDRI and Troika Pharmaceutical Pvt Ltd (Ahmedabad) to develop, manufacture and commercialise CSIR-CDRI's S007-1500 as a potential rapid fracture-healing agent. The collaboration aims to leverage CSIR-CDRI's drug discovery expertise and Troika's broad expertise in clinical development, manufacturing and commercialisation to speed up drug development programme.

Team leader Atul Goel and Divya Singh said that currently there is no oral treatment available for fractured bone healing. CSIR-CDRI has developed a novel small molecule S007-1500 (new chemical entity) as a rapid fracture-healing agent. The efficacy and safety of S007-1500 has been established by CSIR-CDRI in various animal models. CSIR-CDRI has received approval to conduct phase-I clinical trial from CDSCO.

The prestigious CDRI Awards-2022 for Excellence in Drug Research were also announced. These awards will be conferred on CSIR's Foundation Day in September later this year.



Licensing Agreement executed with M/s GenetoProtein Pvt. Ltd., Lucknow on 16/02/2022 w.r.t. "A Nucleic Acid Staining Dye for Biomedical Applications."





CSIR-CDRI and Aveta Biomics, USA Announce License to Aveta Biomics for the Development and Commercialization of First-in-Class Bone Health Drugs

अमेरिका में भी मिलेगी CDRI की दवा

अस्थि स्वास्थ्य दवा को लेकर सीडीआरआई व अमेरिकी कंपनी के बीच करार

लखनऊ (एसएनबी)। हड्डी को स्वस्थ रखने और मजबूती देने के लिए केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई), लखनऊ द्वारा की तैयार की प्रथम श्रेणी की अस्थि स्वास्थ्य दवा अब अमेरिका के लोगों को भी उपलब्ध हो सकेगी। इस दवा के विकास और व्यावसायीकरण के लिए सीडीआरआई और अमेरिका की एवेता वायोमिक्स (वोस्टन) कंपनी के बीच करार हुआ है तथा सीडीआरआई ने अमेरिका की एवेता वायोमिक्स को लाइसेंस देने की घोषणा की है। अमेरिकी की कंपनी को लाइसेंस मिल जाने के बाद सीडीआरआई द्वारा वनस्पतियों से तैयार की गयी उक्त दवा वहां निर्मित हो सकेगी। यह दवा ऑस्टियोपोरोसिस, फ्रैक्चर उपचार, ऑस्टियोआर्थराइटिस और अन्य एंडोक्रिनोलॉजिकल विकारों के इलाज में काफी कारगर है।

सीडीआरआई के निदेशक प्रो. तपस कुमार कुंडू ने बताया कि यह लाइसेंस हमारे विज्ञान की क्षमता का एक प्रतिमान है जो हमारे वैज्ञानिकों की सशक्त एवं विश्व-स्तरीय अनुसंधान उत्पादकता के मूल्य को प्रदर्शित करता है। एवेता वायोमिक्स के साथ ह्यथ मिलाने से उम्मीद है कि सीडीआरआई के इस शोध के माध्यम से दुनिया भर में अस्थि संबंधित विकारों (रोगों) के साथ रहने वाले लोगों के लिए एक उत्तम औषधि तैयार की जा सकेगी। इस दौरान वायोमिक्स, यूएसए के सीईओ डा.



परागजी मेहता ने कहा कि हम मरीजों के लिए इस नई दवा को लाने के लिए उत्साहित हैं और हमें खुशी है कि हम सीडीआरआई टीम की गूढ़ वैज्ञानिक जानकारी से लाभ उठा सकते हैं।

सीडीआरआई के एंडोक्रिनोलॉजी डिवीजन की डा. रिंतु त्रिवेदी ने बताया कि शीशम की पत्तियों में खास कैवियुनिन स्केफोल्ड तत्व पाया जाता है,

जो हड्डियों के लिए संजीवनी से कम नहीं है। इस तत्व को खास प्रक्रिया से गुजारने के बाद दवा तैयार की गई है। भारत में वर्ष 2017 से शीशम की पत्तियों से तैयार दवा टैबलेट की तरह बेंची जा रही है। अब अमेरिका की कंपनी को लाइसेंस दिया गया है। कंपनी न सिर्फ दवा तैयार कर विक्री करेगी बल्कि आगे शोध भी करेगी।

भारत में 50 मिलियन महिलाएं ऑस्टियोपोरोसिस से पीड़ित

लखनऊ। बढ़ती उम्र के साथ पुरुषों व महिलाओं की हड्डियां कमजोर हो जाती हैं तथा उन्हें तमाम तरह की हड्डियों की बीमारियों से जूझना पड़ता है। इंडियन सोसाइटी फॉर वोन एंड मिनरल रिसर्च (आईएसवीएमआई), भारत के अनुसार 50 मिलियन भारतीय महिलाएं ऑस्टियोपोरोसिस से पीड़ित हैं। दुनिया भर में हर तीन में से एक महिला और 50 वर्ष से अधिक उम्र के हर पांच पुरुषों में से एक को ऑस्टियोपोरोटिक फ्रैक्चर की संभावना होती है। अकेले अमेरिका में 50 वर्ष से अधिक आयु के अनुमानित 10 मिलियन लोगों को ऑस्टियोपोरोसिस है और संयुक्त राज्य अमेरिका में हर दो में से एक महिला अपने जीवनकाल में एक बार नाजुक फ्रैक्चर से अवश्य पीड़ित होती है। अमेरिका में 43 मिलियन से अधिक लोगों में हड्डियों का द्रव्यमान कम है, जिससे उन्हें ऑस्टियोपोरोसिस का खतरा बढ़ जाता है। विश्व स्तर पर वर्ष 2019 में 178 मिलियन नए फ्रैक्चर और फ्रैक्चर से जुड़े विकारों के 455 मिलियन मामले रिकॉर्ड किए गए थे।

CDRI bone health drug to be developed in US

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: CSIR-Central Drug Research Institute's osteoporosis drug launched in 2015 will be the first drug of the institute to be used by patients in the United States.

CDRI has given the license of its patented drug Caviunin Scaffold to Aveta Biomics which is a leader in developing the next generation of botanical drugs for its development and commercialization.

Caviunin Scaffold has broad applications for bone health that includes its efficacy in treating osteoporosis, fracture healing, osteoarthritis and other endocrinological conditions.

The drug has dual benefits as it helps both in bone formation and also bone resorption (break down the tissues in bones).

"Scaffold has a targeted action that prevents bone breakdown, stimulates new bone formation and reduces bone clinical markers. The license to Aveta Biomics is a testament to the calibre of our innovative science and demonstrates the value of



MAJOR KUDOS: Principal scientist Ritu Trivedi along with the team members who discovered the drug

the strong research," said principal scientist Ritu Trivedi, who led the osteoporosis drug research.

CSIR-CDRI director Prof Tapas Kundu said, "We joined hands with Aveta Biomics given their track record of obtaining four clinical investigational new drugs (INDs) applications of their botanical drugs and for several cancer indications from the US Food and Drug Administration. We expect, therefore, translation of CDRI's research into real drugs for people living with

bone-related conditions not only in India but abroad also."

"Osteoporosis is a chronic condition requiring life-long treatment. Approved treatment duration of currently available drugs ranges from one to five years (depending on the drug) due to waning efficacy and increased risk of adverse events. Caviunin-based therapeutic has a huge potential to change the standard of care for osteoporosis," said CEO of Aveta Biomics Parag G. Mehta.



Licensing Agreement signed with M/s MARC Laboratories Pvt. Ltd., Lucknow on 10 June 2021 w.r.t. CDRI Antiplatelet Compound S007-867

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow



Demonstration of Know-How process technology of “A Novel Small Molecule Antiplatelet Compound S007-867” during 13-15 December, 2021

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow

CDRI transfers tech for drug of heart attack, stroke



PNS ■ LUCKNOW

CDRI, committed to support pharma cluster in Uttar Pradesh, has tied up with UP-based Marc Laboratories Pvt Ltd, a young progressive enterprise with an operating base in 13 other states. It had earlier signed an agreement for the development of a synthetic compound S-007-867.

"This may be helpful in treating the patient population of coronary and cerebral artery diseases. The institute has recently obtained the permission to initiate the phase-I clinical trials for the drug," CDRI spokesperson Sanjeev Yadav said.

Director TK Kundu said it is a great moment for CSIR-CDRI, the premiere drug

development research institute of the country, as it has transferred the technology for the synthesis of the compound successfully to Marc Laboratories Ltd. "It will allow Marc Laboratories to scale up the methodology for production of the compound under cGMP conditions. It will help initiate the phase-I clinical trials with the drug to check its safety and efficacy in human subjects," he said.

"I am optimistic that this compound will reach the market in quick time for the benefit of humanity. This industry-academia partnership will be very beneficial for development of the pharma cluster in UP and will open up new avenues for 'Made in India' and indigenous affordable drugs,"

he added.

Chairman of Marc Laboratories Prem Kishore said, "Marc's association with CSIR-CDRI will be beneficial to both parties and they will be working hard to take the novel compound forward and complete all regulatory requirements so that it reaches the market at the earliest."

The technology for the preparation of the compound S007-867 was demonstrated by Sanjay Batra and Anil KS to the team of Marc Laboratories headed by plant manager Avinash Srivastava.

The CDRI spokesperson said arterial thrombosis is an acute complication that develops on the chronic lesions of atherosclerosis, leading to heart attack and stroke. "Therefore,

शनिवार सूर्यास्त 5:17 बजे
रविवार सूर्योदय 6:50 बजे

बस अड्डा शामिल है। इनके अलावा मरठ, कानपुर, वाराणसी, गोरखपुर व मथुरा के एक-एक बस अड्डे की तस्वीर बदलेगी।

रोडवेज की वेबसाइट पर एडवॉस और तत्काल सीटों की बुकिंग होने लगी है।

लागा क नमून भा लिए गए ह। वहा आशियाना निवासी मरीज ने चायरल के लक्षण पर जांच करवाई थी।

बच्चे का लकर पहुंचा। पापाई किट पहन कर्मचारियों ने बच्चे को अटेंड किया। डॉ. सुरेश व डॉ. बृजेश ने टीम के साथ बच्चे

साएन तीसरी तैयारि

मिलेगा बेहतर इलाज मार्क लैबोरेटरीज लिमिटेड को हस्तांतरित की गई प्रौद्योगिकी, नई दवा अगले छह माह में उपलब्ध होने की उम्मीद

हार्ट अटैक, स्ट्रोक से बचाएगी सीडीआरआई की दवा

■ एनबीटी, लखनऊ

केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई) ने दिल के दौरों और स्ट्रोक दोनों के लिए विकसित दवा एस-007-867 की तकनीक शुक्रवार को मार्क लैबोरेटरीज लिमिटेड को हस्तांतरित कर दी। सीडीआरआई के निदेशक प्रो. तपस कुमार कुंडू के अनुसार दोनों ही बीमारियों में बेहद कारगर दवा अगले छह महीने में बाजार में उपलब्ध होने की उम्मीद है। संस्थान को हाल ही में दवा के पहले चरण के नैदानिक परीक्षण की अनुमति मिली है। सीडीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के मुताबिक हार्ट अटैक और स्ट्रोक के मरीजों को वर्तमान में दी जाने वाली दवाएं खून को बेहद पतला कर देती हैं। ऐसे में धमनियों से खून के रिसाव का खतरा बढ़ जाता है।



सीडीआरआई ने शुक्रवार को हस्तांतरित की तकनीक।

कई बार कान से खून बहना शुरू होने से मरीज की हालत गंभीर हो जाती है। दवा है कि संस्थान की तरफ से विकसित की गई दवा एस-007-867 दोनों ही बीमारियों में बेहद कारगर होने के साथ ही खून को बहुत पतला नहीं होने देती है।

प्रो. तपस कुमार कुंडू के मुताबिक परीक्षण के दौरान न्यूनतम रक्तस्राव के साथ दवा ने एंटीथ्रोम्बोटिक गुण प्रदर्शित किए हैं। पूरी तरह स्वदेशी दवा अपेक्षाकृत कम दाम में मरीजों को उपलब्ध हो सकेगी।

दवा की तकनीक के बारे में संस्थान के डॉ. संजय बत्रा और डॉ. अनिल केएस ने मार्क लैबोरेटरीज की टीम कोप्लांट मैनेजर अविनाश श्रीवास्तव को जानकारी दी। सीडीआरआई के निदेशक के अनुसार विकसित की गई दवा संस्थान के लिए काफी अहम साबित होगी। औषधीय यौगिक के संश्लेषण की प्रौद्योगिकी को हस्तांतरित किया गया है। मार्क लैबोरेटरीज जल्द ही सीजीएमपी शर्तों के तहत बड़े पैमाने पर उत्पादन करेगी।

सर्दियों में कमजोर होने लगा दिल, बढ़े मरीज

डेढ़ गुना तक बड़े हार्ट फेल्योर और अटैक के मरीज

■ एनबीटी सं., लखनऊ: ठंड बढ़ने का असर हार्ट पर भी पड़ने लगा है। दिल के मरीजों में तेजी से इजाफा होने से शहर के सभी बड़े हार्ट सेंटर पर मरीजों की संख्या सामान्य दिनों से डेढ़ गुना हो गई है। लारी और पीजीआई समेत बड़े निजी अस्पतालों में भी मरीजों की संख्या बढ़ी है। पीजीआई के डॉ. आदित्य कपूर के अनुसार सर्दियों के साथ ही हार्ट फेल्योर के लगभग 20 से 30 फीसदी मरीजों को भर्ती करना पड़ रहा है। तापमान कम होने से रक्त वाहिकाएं सिकुड़ने से दिक्कत होती है। रक्त प्रवाह बाधित होने से दिल पर परिपक्व के लिए अतिरिक्त बोझ पड़ता है।

ऐसे में कई मरीज हार्ट फेल्योर का शिकार हो जाते हैं।

केजीएमयू के डॉ. आयुष शुक्ला के अनुसार पिछले कुछ दिनों से इमरजेंसी में मरीजों की संख्या डेढ़ गुना हो गई है। सामान्य दिनों में सौ से डेढ़ सौ मरीज इमरजेंसी में आते हैं, जबकि इस समय दो सौ से अधिक आ रहे हैं।

मेदांता के कार्डियोलॉजी विभाग के निदेशक डॉ. नकुल सिन्हा ने बताया कि भारत में हार्ट फेल्योर के मरीजों की औसत आयु 59 साल है, जबकि पश्चिमी देशों में 69 साल है। इसका बड़ा कारण हमारी जीवनशैली है।

CMYK



Transfer of technology to M/s Biotech Desk Pvt. Ltd. (BDPL), Hyderabad on 17-02-2021.

...अपने एक स्वतंत्र और परामर्शपूर्ण राष्ट्रीय विज्ञान नीति के तहत स्व-निर्देशित विकास के लिए। -डॉ. आनंद कुमार राय

सीडीआरआई ने कोविड जांच के लिए बनाई स्वेदशी किट

अनुमति के बाद दो महीने में शुरू हो जाएंगी 'इंडीफ्लोर कोविड' किट से जांचें

माइं सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। कोरोना जांच के लिए केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई) ने स्वेदशी व स्वेदशी किट 'इंडीफ्लोर कोविड' तैयार की है। इसे तैयार करने में उपलब्ध होने वाली फ्लोरिमेंट डाई और क्वैचरम को सीडीआरआई ने विकसित कर लिया है। इसके लिए अभी तक हम यूरोप व अमेरिका पर निर्भर हैं।

संस्थान के 70वें स्थापना दिवस पर इंडीफ्लोर कोविड किट की विकसित तकनीक को हैदराबाद की कंपनी चावोटैक टेक्नॉलॉजी को दिया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. तापस कुर् का कहना है कि फ्लोरिमेंट डाई- सीडीआरआई-केडी), सीडीआरआई-केडी।एनएड के अलावा क्वैचरम- सीडीआरआई-केडी, सीडीआरआई-केडी 4 का उपयोग कर जांच किट विकसित की गई है। स्वेदशी तकनीक से तैयार इस किट का उपयोग कोविड के प्रारंभिक परीक्षण के अलावा सीरोलॉजिकल टेस्ट में भी किया जा सकेगा।

तकनीक विकसित करने वाली टीम के प्रमुख डॉ. अरुण शोक्ल ने बताया कि केवल बीस मिनट में इसे तैयार किया गया है। जब इंडियन काउंसिल ऑफ

बैडिकल रिसर्च की अनुमति के बाद इसका उपयोग किया जा सकेगा। इसमें दो मिनट तक लागू करते हैं। कोविड जांच के लिए न्यू-आर्टीफिसीअल रबबले

धर्मसंद माध्यम है। इस टीम में डॉ. गोपाल के साथ अन्य वैज्ञानिक डॉ. अशीष अरोड़ा, डॉ. जैत कुमार, डॉ. एन रामेश्वर रेड्डी शामिल हैं।

डॉ. चोपरा ने बताया कि जांच के लिए अभी लगभग 90 प्रतिशत पैटीयन्ट नैबे टेकनीक से जांचें जा रही हैं, पुरस्कार, मुझे से अत्यंत आनंद हुआ है। जब इसे केवल 10 प्रतिशत मात्रा में ही अद्यतन कर-या होगा। इस में मुझे-आरबी कोविड जांच 4000 रुपये से अधिक थी। अब भी 700 रुपये से अधिक लागू रहे हैं। यदि किट के उत्पादन में जांच 30 प्रतिशत तक कम होकर में हो सकेगी। किट का उत्पादन शुरू होने पर इसमें और कमी आएगी।

30 फीसदी सस्ती होगी जांच

संस्थान ने दिए दवाओं के सुरक्षित विकल्प

लखनऊ। मलेरिया व गर्भनिरोधक दवाओं के लिए सुरक्षित विकल्प देकर सीडीआरआई के वैज्ञानिकों ने खुद को साबित किया है। संस्थान लगातार 70 साल से दुनिया में सस्ती व बेहतर दवाएं बनाने में सहयोगी बन रहा। यह भारत के राष्ट्रीय विज्ञान एवं

सीडीआरआई ने बताया 70वें स्थापना दिवस।

...कार्यक्रम में 46वें सर

...शुभक

...की थी



स्वेदशी किट 'इंडीफ्लोर कोविड' बनाने वाली सीडीआरआई की टीम।



सीडीआरआई ने बताया 70वें स्थापना दिवस।

CDRI tech to make RT PCR cheaper

Makes Reagent Which Is As Of Now Imported

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: Considered the most reliable method to confirm Covid-19 infection, the RT PCR test will cost much lesser soon. Besides, it will give results in a few hours instead of taking a day as it does now. The reverse transcription polymerase chain reaction (RT PCR) test detects the virus in a human cell using a reagent. This reagent is imported from foreign countries due to which the cost of the test is high.

Now, the reagent has been indigenously developed by CSIR-Central Drug Research Institute (CDRI) after a year's work. The reagents bind with the viral genome to indicate whether a person is infected with a virus. With IIR-CDRI developing the

TOWARDS SELF-RELIANCE

► The reagent used in RT PCR test kit for Covid-19 is imported from foreign countries

► Due to this, the cost of the test is high. Now, the reagent has been indigenously developed by CSIR-CDRI



The tech transfer happened on CDRI's annual day on Wednesday

► The institute has transferred the technology, developed after a year of research, to a Hyderabad-based firm

technology and transferring it to Hyderabad-based M/s Biotech Desk Pvt Ltd, the test will become cheaper and also give results quicker.

The transfer happened during CSIR-CDRI's 70th annual day celebrations held on Wednesday.

Senior principal scientist Atul Goel and his team made the fluorescent dyes and quenchers (reagents).

"The team began working on this technology in July when the cost of a Covid test was around Rs 4,000 per sam-

ple. RT PCR is the most robust and reliable method of testing for Covid-19. It utilizes the costly imported TaqMan probes (reagent)," said Goel.

"CDRI's dyes and quenchers will reduce the dependency on supply of reagents and kits from foreign manufacturers. Our larger goal is capacity building for India to make India self-reliant," he added.

"This is also a step on the path of 'Atmanirbhar Bharat,'" said CDRI spokesperson Sanjeev Yadav.

To support hosps, industry in R&D

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: The Central Drug Research Institute (CDRI) has established a Common Research and Technology Development Hub (CRTDH) to extend support to hospitals and to pharma industry, MSMEs and academia for conducting advanced research.

CRTDH was inaugurated during the 70th annual day celebration of the institute on Wednesday.

"CRDTH is not only for scientists but for institutions conducting advanced research in the field of drug discovery. CDRI will not only provide infrastructure support like high-end laboratories and equipment but also the expertise of our scientists," said CDRI spokesperson Sanjeev Yadav.

son Sanjeev Yadav.

The Atal National Colloquium on Healthcare and Innovation, a series of lectures from eminent persons, was also virtually inaugurated by Union minister for health & family welfare, science and technology and earth sciences, Dr Harsh Vardhan.

The event will be held annually to commemorate the vision of former Prime Minister Atal Bihari Vajpayee for scientific development.

The celebration culminated with the institute announcing CDRI Awards-2021 for excellence in drug research which will be conferred on CSIR's foundation day in September this year. The award in chemical sciences category will be given to associate professor, IISER (Bhopal), Vishal Rai.



Licensing Agreement executed with Medizest Pharmaceuticals Pvt. Ltd., Goa, w.r.t. "Process for the preparation of Umifenovir " on 24/04/2020

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow

सीडीआरआई का दावा, बना ली है कोरोना की स्वदेशी दवा

उमीफेनोविर से वायरल लोड 5 दिन में खत्म करने का दावा, हल्के एवं लक्षणरहित रोगियों में प्रभावी, उच्च जोखिम वालों के लिए भी उपयोगी

लखनऊ। केंद्रीय औषधिक अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई), लखनऊ ने कोरोना की स्वदेशी दवा उमीफेनोविर बनाने का दावा किया है। संस्थान के अनुसार इस एंटीवायरल दवा के तीसरे चरण का क्लिनिकल ट्रायल सफल रहा है। संस्थान का दावा है कि उमीफेनोविर कोरोना के हल्के व लक्षणरहित रोगियों के इलाज में बहुत प्रभावी है और उच्च जोखिम वाले रोगियों के लिए रोगनिरोधी के रूप में उपयोगी है। यह पांच दिन में वायरल लोड को पूर्ण रूप से खत्म कर देता है।

सीडीआरआई निदेशक प्रो. तपस कुंडू ने बताया कि औषधि महानियंत्रक भारत सरकार (डीसीजीआई) ने गत वर्ष जून में केजीएमयू, एरा लखनऊ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल और राम मनोहर लोहिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के सहयोग से सीडीआरआई को लक्षणविहीन, हल्के और मध्यम कोविड-19 रोगियों पर तीसरे चरण के क्लिनिकल परीक्षण की अनुमति दी थी। सीएसआईआर ने 16 दवाएं सुझाई थीं, जिनमें से उमीफेनोविर (आर्बिडोल) का चयन किया गया। ब्यूरो

■ केजीएमयू, एरा और लोहिया के सहयोग से तीसरे चरण का क्लिनिकल ट्रायल सफल

डेल्टा वैरिएंट पर भी हो सकती है कारगर



प्रो. तपस कुंडू

निदेशक प्रो. कुंडू ने बताया कि उमीफेनोविर टैबलेट के रूप में है। इसे सिरप और इनहेलर के रूप में भी विकसित करने पर काम किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि परीक्षण में ऐसे मरीज भी शामिल थे, जिनमें वायरस का डेल्टा वैरिएंट मिला था। ऐसे में माना जा रहा है कि यह डेल्टा वैरिएंट पर भी कारगर हो सकती है। उन्होंने बताया कि 132 मरीजों पर क्लिनिकल परीक्षण किया गया।

देश में ही उपलब्ध कच्चे माल से तैयार की दवा

निदेशक ने बताया कि उमीफेनोविर को देश में ही उपलब्ध कच्चे माल से तैयार किया गया है। कोरोना वायरस के सेल कल्चर को बेहद प्रभावी तरीके से नष्ट करता है। यह मानव कोशिकाओं में इस वायरस के प्रवेश को रोकता है। इसकी पांच दिन की दवा का खर्च करीब 600 रुपये तक आता है। डीसीजीआई ने क्लिनिकल परीक्षण रिपोर्ट का मूल्यांकन किया है और आपातकालीन स्वीकृति देने के लिए और अधिक संख्या में हल्के लक्षण वाले रोगियों पर अध्ययन जारी रखने के लिए कहा है।

रूस व चीन में एन्फ्लुएंजा और निमोनिया के लिए होता है इस्तेमाल

टीम के समन्वयक डॉ. आर रविशंकर ने बताया कि उमीफेनोविर एक व्यापक स्पेक्ट्रम एंटीवायरल है। रूस, चीन और अन्य देशों में करीब 20 सालों से ज्यादा वर्षों से एन्फ्लुएंजा और निमोनिया के लिए एक सुरक्षित और बिना सलाह के उपलब्ध दवा के रूप में उपयोग किया जाता रहा है। ...पेटेंट कराने में जुटा सीडीआरआई : माईसिटी 5



LUCKNOW | WEDNESDAY | SEPTEMBER 15, 2021

Umifenovir cures Covid in 5 days: CDRI director

PNL LUCKNOW

Coronavirus becomes zero in five days with 'Umifenovir', the drug developed by the Central Drug Research Institute (CDRI), and the dosage is two tablets a day, director Prof TK Kundu said while addressing mediapersons on Tuesday.

Sharing the findings of the Umifenovir trials conducted at three institutes of the city, Prof Kundu said they are waiting for the green signal from the Drug Controller of India after which it would hit the market within two months.

"We have seen that Umifenovir is working fantastically against Covid and the coronavirus becomes zero without any adverse symptoms in five days. None of the patients have gone from mild to severe during the trials. The drug is going to be the cheapest as compared to other drugs available in the market today," he said.

About the challenging times which they faced while developing the drug, he said: "Umifenovir (Arbidol) was selected from among 16 suggested candidates of CSIR upon looking into the feasibility of synthesis using locally available chemicals at the peak of pandemic. Looking into the background and looking into the

possibility of synthesis, we decided to go for Umifenovir. This drug is being used for the last 20 years in Russia and China for common cold, and we decided to take this forward for anti-Covid drug repurposing. We decided to start with the synthesis with whatever we had in our laboratories at a time when no vehicles were plying due to lockdown."

He said that nearly four labs started synthesising this drug and in record time, they finished the synthesis on the campus.

"In the meantime, we got in touch with a company in Goa which was interested in this and through video-conferencing, we showed step-by-step chemical reactions. The technology was transferred to the company online and we prepared the documents to be sent to the Drug Controller General of India and got the approval for phase-3 clinical trials," he said.

He added that the drug was made in Goa when even the postal services were not working properly and on a personal basis, they could get the drug material back in the CDRI.

"We did the stability studies and at the same time, three centres in the city were chosen for trials — KGMU, ERA's Medical College & Hospital and RMLIMS. Ravi Shankar

from our institute took the initiative to connect the entire clinical trials initiative and we decided to go for the double blind placebo trial," he elaborated.

He admitted that it was a setback for them when the state government announced that asymptomatic patients might not be hospitalised because if they were no patients in the hospital, how would you do the trials.

"Finally we did the clinical trials and analysis with our own statisticians and also the external companies, and got very good results," he said.

He added that the dosage used in the study had not been tested earlier against SARS-Cov2 and was in the process of being patented by CDRI.

Dr Himanshu Reddy and Dr Virendra Atam, the project investigators at KGMU, said that the faster recovery of Covid patients would reduce virus shedding and consequent spread of the infection to others. Dr MMA Faridi of ERA said that Umifenovir could be prescribed for pregnant women and children too, when approved. Dr Vikram Singh of RMLIMS suggested that as Umifenovir was safe and had significant efficacy in mild-asymptomatic patients, it could be useful as a prophylactic for high-risk patients.



Licensing Agreement signed with M/s. Lumen Marketing Company, Chennai on 17 February 2019 w.r.t. CSIR-CDRI plant product N-012-0001 for the early management of Benign Prostatic Hyperplasia (BPH)

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow



Demonstration of Know-How process technology for the preparation of the CSIR-CDRI plant product N-012-0001 for the early management of Benign Prostatic Hyperplasia (BPH)



CDRI transfers tech for enlarged prostate mgmt

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

Central Drug Research Institute (CDRI) transferred the technology of a plant-based nutraceutical product which has no steroids and helps in the management of enlarged prostate, a problem commonly faced by men in the age group of 50. The transfer of technology took place on the occasion of its Foundation Day on Sunday.

Scientist Sanjeev Yadav said

CDRI signed a licensing agreement with Lumen Marketing Company, Chennai. CDRI director Tapas Kumar Kundu said the company entered into the agreement with the institute to market this nutraceutical product. Yadav said enlarged prostate was the most common problem of elders and ranks among top 10 most commonly diagnosed conditions in men above 50 years of age.

Pathologically, benign prostatic hyperplasia (BPH) is a

Enlarged prostate is the most common problem of elders and ranks among top 10 most commonly diagnosed conditions in men above 50 years of age

condition in which non-cancerous growth of the prostate gland makes urination quite frequent and uncomfortable.

"The prevalence of this disease is age-dependent, with initial development usually after 40 years of age. More than half of men in their 60s and up to 90 per cent of men in their 70's and 80's have some symptoms of BPH. This plant-based nutraceutical product is non-steroidal and safe," he said.

The salient features of the product include its development from a single Ayurvedic medicinal plant and specific bioactive marker which has

been identified to regulate the quality control of the developed nutraceutical product. The medicinal plant material is abundant in wild and grown commercially. "The plant material is easily renewable and a cost-effective process has been developed to make bioactive enriched fraction at CDRI. This plant material is also specified in schedule IV list of FSSAI regulations to use it as a nutraceutical product," Yadav said.

फार्मा स्टार्टअप को बढ़ावा देकर ही चौथी औद्योगिक क्रांति संभव

सीडीआरआई के वार्षिक समारोह में एकेटीयू के वीसी ने फार्मा स्टार्टअप पर दिया जोर

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। फार्मा स्टार्टअप को बढ़ावा देकर ही औद्योगिक क्रांति 4.0 (चौथी औद्योगिक क्रांति) संभव है। भारत में फार्मा स्टार्ट-अप के लिए जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर को विकसित करने की क्षमता है। यह काम रसायन विज्ञान, जीवविज्ञान और इंजीनियरिंग के एक साथ लाने से संभव हो सकता है। हमें दवाओं के शोध के साथ मशीनों की समझ, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग पर एक साथ काम करना होगा। ऐसा करने से ही हम औद्योगिक क्रांति में अगुआ रह पाएंगे। ये बातें एकेटीयू के वीसी प्रो. विनय कुमार पाठक ने सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीडीआरआई) के वार्षिक समारोह में कहीं।

कतिर मुख्य अतिथि प्रो. पाठक ने कहा कि हमें समझना होगा कि औद्योगिक क्रांति 2.0 और 3.0 से मिलने वाले लाभ को हमने तकनीक और चिकित्सा व स्वास्थ्य सेवाओं के लिए जरूरी संसाधन खरीदने में खर्च कर दिया। क्या इसका संसाधन निकालते हुए हम 4.0 के लिए तैयार हैं। कार्यक्रम में



सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट के वार्षिक समारोह में मौजूद एकेटीयू के वीसी प्रो. विनय कुमार पाठक व अन्य।

बोले विशेषज्ञ, प्रतिरोधक क्षमता के बढ़ते कारणों के कारण बनानी होंगी अगली पीढ़ी की दवाएं

सीडीआरआई के निदेशक प्रो. तापस कुंडू ने पूरे साल में संस्थान के किए कामों की जानकारी दी।

प्रतिरोधक क्षमता से निबटने वाली दवाएं बनाएं : अमेरिका की कर्निल यूनिवर्सिटी में फैकल्टी प्रो. डेविड जी रसेल ने 44वें सर एडवर्ड मेलानबी मेमोरियल व्याख्यान देते हुए कहा कि दवाओं की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने के कई मामले सामने आए हैं। ऐसा अलग-अलग बीमारियों को दवाओं में हो रहा है। ऐसे में जरूरी है कि नई पीढ़ी की दवाएं बनाई जाएं। एंटी माइक्रोबियल दवाएं बनाने से

एचआईवी, टीबी, मलेरिया जैसी बीमारियों के संक्रमण से बचा जा सकेगा। दवाओं की प्रतिरोधकता बढ़ने से इन बीमारियों का इलाज मुश्किल हो रहा है। दूसरा संकट हमारे सामने दवाओं के शोध में वित्तीय खर्च अधिक होने के रूप में भी सामने आ रहा है। एंटी बायोटिक दवाओं के प्रतिरोधक क्षमता की वजह से शोध एवं विकास का काम रुका हुआ है।

प्रोस्टेट की दवा का न्यूट्रास्यूटिकल जल्द बाजार में : प्रो. कुंडू ने प्रोस्टेट की बीमारी के इलाज के लिए एक न्यूट्रास्यूटिकल की तकनीक का हस्तोत्तरण रविवार को किया। इसे चेन्नई की एक कंपनी ने लिया है। यह कंपनी जल्दी ही इस दवा के साथ पोषक तत्व को बाजार

में उतारेगी। इसके अलावा सीडीआरआई पुरस्कार-2019 के लिए लाइफ साइसेल श्रेणी में आईआईएससी बंगलुरु के डॉ. अमित सिंह व आईआईसीबी कोलकाता के डॉ. दीपनयन गंगुली को, रसायन विज्ञान श्रेणी में आईआईएसईआर पुणे के डॉ. एस गोपालन श्रीवत्सन, जेएनसीएसआर बंगलुरु के डॉ. टी गोविंद राजू को अवार्ड दिया गया।

इनको भी दिए गए अवार्ड

डॉ. एमएम धर मेमोरियल कैरिअर अचीवमेंट अवार्ड-2019 डॉ. सुधीर फाल व डॉ. दुर्गा कुमार, डॉ. एमएम धर मेमोरियल कैरिअर अचीवमेंट अवार्ड-2019 अचि रंश मिश्रा व सम्पा गुप्ता, डॉ. जेएम खन्ना मेमोरियल डिस्टिंग्विश्ड करियर अचीवमेंट अवार्ड-2019 सुशोभन मुखोपाध्याय व यू संदीप, डॉ. स्वर्ण नित्या आनंद मेमोरियल अर्ली कैरिअर अचीवमेंट अवार्ड-2019 आकांक्षा मिश्रा, डॉ. डीएल श्रीवास्तव मेमोरियल अर्ली कैरिअर अचीवमेंट अवार्ड-2019 वेंकटेश तेजा बनल्ला को दिया गया।

विज्ञप्ति

बाह्य विकास परिशीलन अखिलनगर लखनऊ के कार्यालय हेतु निम्न प्रतिबन्धों के अंतर्गत कार्यप्रणाली है-

- 1- बचन का कवरपेट पुरिया अक्षितम 1100 नकाशा किट हो।
- 2- बचन ऐसे स्थान पर हो जहाँ पर निर्दिष्ट सामग्री/दस्तावेज आसानी से मिले।
- 3- बचन में लौहासत्व, विजली एवं पानी की उचित व्यवस्था हो।
- 4- बचन में शान्तवीर्य वाहन खड़ा करने का स्थान हो।
- 5- बचन में दो कमरे व गोदाम होना आवश्यक है।

इसतुक्त बचन स्वामी अपने आवेदन दिनांक 20.02.2019 तक का कार्यालय बालू भवन, सी-100/3 कानाचौपुरम बस्ती/सी लखनऊ में सौंपकर प्रेषित करें।



Licensing Agreement signed with M/s Pharmeda Hebal Pvt. Ltd., Gujarat on 17 February 2018 w.r.t. Standardized Fraction 219C002 for Treatment of Glucocorticoid-induced Osteoporosis



Demonstration of Know-How process technology for the Bioactive extract and formulation of CDRI 219-C002 from the terrestrial plant *Cassia occidentalis* for bone regeneration and mitigation of corticosteroid-induced osteoporosis”



Signing of Technology Transfer Document w.r.t. “CDRI product CDR2492/C003 – a standardized formulation for the management of osteoarthritis”

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow



Licensing Agreement signed with M/s. Pharmedza Hebal Pvt. Ltd., on 31 July 2017 w.r.t. CDRI product CDR2492/C003 – a standardized formulation for the management of osteoarthritis



Joint Fresh launched for marketing on 13 March 2018 for the management of osteoarthritis

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow

CDRI launches nutraceutical to prevent osteoarthritis

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

Director, CSIR-CDRI, Alok Dhawan launched a nutraceutical with a special dietary ingredient from palak (spinach) to prevent osteoarthritis. "Nutraceuticals can be considered non-specific biological therapies used to promote general well-being, control symptoms and prevent disease processes," said media incharge of CDRI Sanjeev Yadav.

He said that the product would be available as 'Joint Fresh' in the market after a scientific validation to maintain by CSIR-CDRI. It had been launched with Pharamanza Herbls Pvt Ltd and its marketing partner Aeran Lab (India) Pvt Ltd. "This nutraceutical has extra health benefits for osteoarthritic joints in addition to the basic nutritional value found in *Spinacea oleracea* (palak). The product will now be available in the market at medical stores and online at longlives.com. The nano formulation was licensed to Pharamanza Pvt Ltd on July 31, 2017. Executive director, Aeran Lab (India) Pvt Ltd, Sanjeev Agarwal and a team of researchers were present on the occasion," he added. The team of researchers behind this success story included scientists Ritu Trivedi, Prabhat Ranjan Mishra, Rakesh Maurya, SK Rath, Brijesh Kumar and



PK Shukla. The research students, who were a part of this project, were Dharmendra Choudhary, Priyanka Kothari, Ashish Tripathi, Sudhir, Naresh Mittapelly, Kapil Dev, Gitu Pandey, Naseer Ahmad and Sulekha Adhikary, and among the supporting staff were SC Tiwari and GK Nagar.

Yadav said that the CSIR-CDRI had identified *Spinacea oleracea* (deshi palak) for the prevention of osteoarthritis and degeneration of cartilages. "It imparts no toxicity and is effective at lower doses with nano formulation. Presently no oral drug was available to cure osteoarthritis, he said.

He said: 'Nutraceutical' stands for two words - 'nutrient' (a nourishing

food component) and 'pharmaceutical' (a medical drug) or it means that 'let food be your medicine.' Talking about osteoarthritis, he said that it was a condition which affected the joints. "The surfaces within joints get damaged so they do not operate as smoothly. It afflicts mainly the weight-bearing joints such as hips and knees and causes physical disability. Both men and women are affected by osteoarthritis. Only symptomatic treatments are available with pain killers like Ibuprofen and Naproxen. These drugs on long term use show liver and renal toxicity and also have a negative impact on the gastric and cardiac status of the patients," he added.

<http://www.dailypioneer.com/todays-newspaper>



The Lab scale technology of CDR2492/C003 – A standardized formulation for the management of osteoarthritis demonstrated and transferred to M/s. Pharmeda Herbal Pvt. Ltd., Gujarat during 8-12th Jan. 2018 at CSIR-CDRI, Lucknow.

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow



Technology of the product-Novel Osteo-inductive Agent CDRI S008-399 as Medicated Bone implant Material for Fracture Healing transferred to M/s. Ortho Regenics Pvt. Ltd., Hyderabad, on 26 September 2018 during 76th CSIR Foundation Day celebrations



Reunion launched for marketing on 17 February 2016 for rapid fracture healing & post-menopausal osteoporosis

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow

NBT

नवभारत टाइम्स

नई उम्मीद

सीडीआरआई आज लॉन्च करेगा दवा, क्लीनिकल ट्रायल में हुई सफल

शीशम की पत्तियों से जुड़ेगी टूटी हड्डी

■ एनबीटी, लखनऊ

इमारती लकड़ी के लिए मशहूर शीशम की पत्ती से हड्डी जोड़ने के लिए बनी हर्बल दवाई बनकर तैयार हो गई है। केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सीडीआरआई) बुधवार को अपने 65वें वार्षिक समारोह पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान ये दवा लॉन्च करेगा। यह जानकारी मंगलवार को संस्थान की निदेशक डॉ. मधु दीक्षित ने एक होटल में आयोजित पत्रकारवार्ता के दौरान दी।

डॉ. मधु दीक्षित ने बताया कि सीडीआरआई की टीम ने इस औषधि पर काफी रिसर्च किया है। अब इसे मार्केट में लॉन्च किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि क्लीनिकल ट्रायल में यह दवा फ्रैक्चर फ्रैक्चर हॉलिंग के लिए सुरक्षित और अमरदायक साबित हुई है। डॉ. राकेश मौर्या ने पत्तियों में मौजूद फ्लेवोनॉयड्स के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि शीशम की पत्तियों में कैवोयुनिन नामक मॉलिक्यूल हड्डियों को मजबूती देने का काम करता है। आम तौर से हड्डियों को जुड़ने में छह सप्ताह लगते हैं जबकि इस मॉलिक्यूल से बनाई गई दवा से महज तीन-चार सप्ताह में हड्डी जुड़ जाएगी। इस दवा का कोई दुष्प्रभाव भी नहीं है। इस अवसर पर डॉ. नैवेद्य चट्टोपाध्याय व डॉ. अमृत त्रिवेदी ने भी दवा की विशेषताओं के बारे में बताया। मालूम हो कि सीडीआरआई 12 साल बाद किसी दवा के लिए लाइसेंस देने जा रहा है।

तीन से चार सप्ताह में टूटी हड्डी जुड़ने का दावा



सीडीआरआई के वैज्ञानिकों ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में दवा के बारे में जानकारी दी।

आज होगा वार्षिक समारोह

सीडीआरआई बुधवार को अपना 65वां वार्षिक दिवस मनाने जा रहा है। वार्षिक समारोह में बतौर मुख्य अतिथि एसजीपीजीआई के निदेशक डॉ. राकेश कपूर होंगे। जबकि अध्यक्षता स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग भारत सरकार की सचिव डॉ. सीम्या स्वामीनाथन करेंगी। इस दौरान संस्थान की वार्षिक पत्रिका का विमोचन भी किया जाएगा।

मार्च तक मार्केट में आएगी दवा

सीडीआरआई ने मुंबई की ऐरन फार्मास्युटिकल कंपनी को इस दवा का लाइसेंस दिया है। यह दवा मार्च के अंत तक मार्केट में आ जाएगी। ऐरन फार्मास्युटिकल कंपनी के आनंद ने बताया कि मार्केट में उचित दाम पर बेस्ट प्रोडक्ट लाया जाएगा। उन्होंने बताया कि इस दवा के प्रॉडक्शन के लिए अधिक मात्रा में शीशम की पत्तियों की जरूरत पड़ेगी। इस तरह से हम किसानों के लिए आमदनी का एक नया रास्ता बन जाएगा। उन्होंने दावा किया कि फ्रेक्चर ठीक करने के लिए इस्तेमाल की जा रही दवाइयों की कीमत की तुलना में इस हर्बल दवाई के दाम काफी कम होंगे।



The Lab scale technology of CSIR-CDRI Plant Extract A-4744- standardized extract of *Dalbergia sisso* for for rapid fracture healing & post-menopausal osteoporosis demonstrated and transferred to M/s. Pharmanza Herbal Pvt. Ltd., Gujarat during 15 -23 June 2015 at CSIR-CDRI, Lucknow.

CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow



THE TIMES OF INDIA

INCLUDES OF LUCKNOW TIMES (CITY ONLY) | ENEWS@TIMESOFINDIA.COM

Bone health drug from leaves of Sheesham

The city-based Central Drug Research Institute, a Council of Scientific and Industrial Research laboratory, has developed a new herbal medicine for bone health. The medicine, based on Indian Rosewood or 'Sheesham', would be formally unveiled on the 65th annual day of the institute on February 17. **P 3**

CDRI makes drug from 'sheesham' leaves for bones

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: The city-based Central Drug Research Institute, a Council of Scientific and Industrial Research laboratory, has developed a new herbal medicine for bone health. The medicine, based on Indian Rosewood or 'Sheesham', would be formally unveiled on the 65th annual day of the institute on February 17. The last CDRI drug to enter the market was CONSAP (a contraceptive cream) in 2004. The new drug is likely to hit the market in March.

Speaking about the drug, CDRI director Madhu Dixit said, "This herbal preparation is made from leaves of Dalbergia sissoo, a large deciduous perennial tree, growing in lowland region throughout India, popularly known as 'Sheesham'. This medicine helps us in improving bone health and will bring hope to farmers for cultivating this tree for their economic benefits."

Dixit, the first woman director of the institute, also

mentioned that as far as the results of the clinical trials are concerned, this drug is safe and effective for healing fractures. "Soon we will come up with the results of clinical trials for treating osteoporosis also. This preparation

is made from leaves, a new part of the plant so it will not affect the ecology."

Will fresh leaves of Sheesham have the same kind of effect on bone health? CDRI scientist Naibedy Chattopadhyaya, who is closely associated with the drug, says: "This is a standardized extract hence we know the exact amount of active ingredients in it which are required for bone health which cannot be obtained in optimum dose by consuming fresh leaves."

Anand from the pharmaceutical company which is producing the drug, said that for the production of this herbal drug, continuously supply of a huge amount of drug would be required. "So, this will provide a new avenue for farmers and common man," he adds.



CDRI director Madhu Dixit